INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

लोकतांत्रिक राजनीतिशास्त्र

डॉ. गौरव देशमुख डॉ. राजेश मारकण्डेय

आधुनिक भारतीय समाज में राजनैतिक व्यवस्था –

प्रस्तावना – विस्तृत क्षेत्र में लोकतंत्र न केवल राजनैतिक अवधारणा दर्शाता है बल्कि समाज की एक जीवन शैली भी दर्शाता है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को समाज की सरंचनाओं और संस्थाओं से उसकी स्वतंत्र भागीदारी के संदर्भ में समानता का अधिकार होता है। लोकतंत्र का अर्थ है जीवन के सभी क्षेत्रों में समाज के सभी सदस्यों को आजादी से वे निर्णय लेने के अवसर मिलना जो उनके जीवन को व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से प्रभावित करते है। लोकतंत्र शब्द राज्य के नागरिकों को राजनैतिक निर्णयों में स्वतंत्रतापूर्ण के भागीदारी के अवसर मिलने से है।

लोकतंत्र क विविध प्रकार – राजनैतिक,सामाजिक,आर्थिक और नैतिक राजनैतिक लोकतंत्र वयस्क मताधिकार तथा अपनी पंसद के नेतृत्व के चुनाव तक ही सीमित है। सामाजिक लोकतंत्र का उद्देश्य वर्गहीन और जातिहीन समाज की रचना करना तथा सामाजिक स्तरीकरण और पूर्वाग्रह को तोड़ना है। आर्थिक लोकतंत्र कल्याणकारी राज्य पर बल देता है और धन केन्द्रीयकरण और आर्थिक विषमताओं के विरूद्ध विद्रोह करता है । नैतिक लोकतन्त्र का झुकाव प्रचलित अभिवृत्तियों के अनुस्थापन तथा सही और गलत व्यवहार की अवधारणा के साथ विचार करने की ओर है। लोकतंत्र के पीछे मित्रभावना, भातृत्व और सद्व्यवहार का दर्शन काम करता है।

प्राचीन भारत में लोकतंत्र –

ऋग्वेद लोकतांत्रिक सिद्धांतों और आदर्शों के प्रति इतना अधिक प्रतिबद्ध है कि इसमें लोकतंत्र को एक देवता माना गया है और इस 'समजन' कहा गया है। इस शब्द का अर्थ है लोगों की सामूहिक चेतना तथा राष्ट्रीय मन जिसके प्रति व्यक्ति का मस्तिष्क श्रद्धांत होता है। क्योंकि इसी स्त्रोत से वह शक्ति प्राप्त करता है। 'समजन' को सम्बोधित स्तुति गान (ऋग्वेद) में लोगों से कहा गया है ि कवे एक सभा में एकत्र हो और वहां एक स्वर में बोलों मन एक ही (सम्मन) चित एक हो (समचित्तन) एक ही नीति हो और आशाओं और आकांक्षाओं में एक ही इस प्रकार लोकतंत्र अपने नागरिकों की आंतरिक एकता व उनकी भावात्मक एकता पर निर्भर माना जाता था। लोकतांत्रिक सिद्धांत सार्वजनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक में कार्य करते थे। वैदिक युग में लोकतांत्रिक परम्परा युगों से भारतीय राजनीतिक की समूची वृद्धि को संचालित करती थी। जहां राजतंत्र का स्वरूप मूलरूप में लोतांत्रिक ही रहा। यह विकेन्द्रीकरण या स्थानीय स्वायत्ता पर निर्भर था। लोग निम्नलिखित उपयुक्त संघ और समूह आरोहो क्रम में स्वशासन में अपने अधिकारों का प्रयोग करने के लिए बना लेते हैं। कुल,जाति,श्रेणी पर और जनपद।प्रत्येक समूह के अपने नियम और कानून होते थे। प्रत्येक अपने स्तर पर स्वशासन लोकतंत्र के लिए करता था। प्राचीन भारत में कुछ जनपद तो स्वरूप में गणतंत्र जेसे होते थे और कुछ में राजतंत्रीय संगठन होता था। लेकिन प्रायः प्रत्येक में एक समिति आधुनिक संसद का पूर्ण स्वरूप होती थी जिसमें ऊंचे और नीचे लोग राज्य के मामलों पर निर्णय लेने के लिए उपस्थित होते थे।

आर.के.मुकर्जी ने उल्लेख किया है – राजतंत्र के साथ–साथ नियमित गणतांत्रिक प्रकार की राजनीति भी विकसित हुई। जिनकी मूलक विविध साहित्यिक पुस्तकों– ब्राम्हण, बौद्ध और जैन में मिलती है। महाभारत में भी कुछ गणराज्यों का उल्लेख है जो 'सधरगण' कहलाते थे। पांच गणराज्यों को अंधक वृएिण,यादव, कुकुर और भोज कहा जाता था। इसको मिलाकर एक संघ बना हुआ था। जिसका अध्ययन संघ मुख्य होता था। इसी तरह महाभारत में गण का उल्लेख है जिसका शासन नेताओं की समितिगण संविधान होता था। प्रत्येक में एक परिषद् होती थी।

जैन और बौद्ध मूलग्रंथों में भी अनेक पूर्वगण राज्यों और कुछ गण राज्यों के परिसंघों जैसे 'वृजि' जिसमें ना महलकी, नौ लिच्छि तथा काशी–कौशल के अनरह गणराज्य तथा अन्य राज्य शामिल थे, का उल्लेख पाया जाता है। यह उल्लेख किया गया है कि महावीर स्वामी की मृत्यु पवर इसी वृजि परिसंघ के 36 गण राज्यों द्वारा उनकी अंतयेष्टि पर अग्नि प्रज्जवलित कर श्रदांजलि अर्पित की गई थी। उन दिनों लिच्छिवी सुपरिचित गण राज्य था जिस पर 7707 राज्यों की समिति शासन करती थी जो संवैधानिक रूप से सम्राट होते थे। सख गणराज्य प्रसिद्ध है। इसी ने संसार बुद्ध जैसा महापुरूष दिया। इस गणराज्य में लगभग 80,000 घराने थे जो गणराज्य के अंग थे जिसमें एक अध्यक्ष या राजा सहित 500 सदस्यों की परिषद या संसद थी। बौद्ध युगीन कुछ प्रसिद्ध गणराज्य थे। वैशाली,पवा,मिथिला आदि। परिषद विधानसभा का कार्य करती थी। उनके निर्णयों का क्रियान्वयन करने के लिए विविध प्रकार की न्यायपालिका तथा कार्यपालिकाएं भी होती थी। केवल एक प्रमुख चुना जाता था। जो परिषद राज्य की अध्यक्षता करता था। उसे राजा पदनाम दिया गया था।

छठी शताब्दी के बाद लोकतांत्रिक संगठनों का पतन शुरू हो गया। राजा और सम्राट लोग युद्धों में व्यस्त रहने लगे। देश की एकता और अखण्डता को बनाए रखने के लिए क्योंकि कोई शक्तिशाली राजा नहीं था, परिणामतः समूचे देश में बड़ी संख्या मे राज्यों का उदय हो गया। आठवी शताब्दी में आगे मुसलमानों ने आक्रमण शुरू कर दिए अन्ततः बारहवी शताब्दी में उन्होंने अपना शासन स्थापित कर ही लिया। मुस्लिम शासक निरंकुश थे।

ब्रिटीश शासन लोकतंत्र के विरूद्ध था। भारत सरकार के अधिनियम 1935 ने भारत में लोकतंत्र शासन की नींव रखी। कांग्रेस 1935 से 1937 तक दो वर्ष के लिए ही सत्ता में रही। 1940 से 1945 तक ब्रिटीश सरकार द्वितीय विश्वयुद्ध में ही फंसी रही। 1946 से भारत की स्वतंत्रता प्रदान करने के प्रयास प्रारंभ हुए और 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्र भारत के संविधान में लोकतंत्र को ही देश में शासन का आधार बनाया गया।

आधुनिक भारत में लोकतंत्र –

आधुनिक भारत में लोकतंत्र कुछ सिद्धांतों पर आधारित है–

(1) प्रत्येक व्यक्ति की अपनी सामर्थ्य योग्यता और प्रतिष्ठा होती है।

(2) प्रत्येक व्यक्ति में दूसरों के साथ अपने जीवन को चलाने और सीखने की क्षमता है।

(3) हर व्यक्ति को बहुसंख्यकों के निर्णय को मानना चाहिए।

(4) प्रत्येक व्यक्ति का निर्णय निर्धारण में हिस्सा होना चाहिए।

(5) लोकतांत्रिक कार्यवाही का नियंत्रण और निर्देशन स्थिति में निहित है न कि इसके बाहर।

(6) जीवन की प्रक्रिया अन्तक्रियात्मक है और सभी व्यक्ति सामान्य रूप से मान्यता प्राप्त उद्देश्यों के लिए कार्य करते है।

(7) प्रजातंत्र व्यक्तिगत अवसरों और व्यक्तिगत उत्तरदायित्वों पर टिका होता है।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में लोकतंत्रीय राजनैतिक व्यवस्था अपनाने का निश्चय किया। इस व्यवस्था की तीन विशेषताएं है–

(1) इसमें उच्च कोटि की स्वायत्ता होती है।

(2) आर्थिक कार्यकर्ता और धार्मिक संगठन राजनैतिक हस्तक्षेप से मुक्त रहते हैं।

(3) विभिन्न व्यवस्थाओं की प्रतिस्पर्धा अखण्डता के लिए खतरा नही होती बल्कि सहायक होती है।

इंदिरा गांधी का शासनकाल जनवरी 1966 और अक्टूबर 1984 (मोरार जी देसाई और चरणसिंह के तीन साल छोड़कर) लोकतांत्रिक नहीं था, बल्कि अधिकारिक शासनकाल रहा, जिसकी तीन विशेषताएं थी –

(1) इसमें प्रमुख सत्ताधीशों के प्रति आज्ञाकारी होना आवश्यक था।
(2) इसमें सार्वजनिक आलोचना और संगठित विरोध को दबाया जाता था।
(3) स्वायत्तशासी संगठनों पर इसकी अधिक पकड़ थी।

संदर्भग्रंथ सूची –

(1) बिपिन चन्द्रा 'कम्यूनालिज्म इन मॉर्डन इंडिया' विकास पब्लिकेशन्स नई दिल्ली 1984
(2) एस.चंद्रशेखर 'इण्डियास पापुलेशन फैक्ट एण्ड पालिसी' मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ 1967
(3) डेविड इस्टान 'दा पालीटीकल सिस्टम अल्फेड न्यूयार्क 1953
(4) रजनी कोठारी 'कास्ट इन इंडियॉन पालिटीक्स' ओरिएन्ट लागमेन दिल्लो 1973
(5) राम आहूजा 'भारतीय समाज' रावत् पब्लिकेशन्स जयपुर 2012
(6) डॉ.धर्मवीर महाजन डॉ. कमलेश महाजन 'भारत में समाज' विवेक प्रकाशन दिल्ली 2005
(7) डॉ. ओमप्रकाश जोशी 'ग्रामीण एवं नगरीय समाजशास्त्र' विश्व भारतीय पब्लिकेशन्स नई दिल्ली 2006
(8) माधव प्रसाद गुप्ता 'मनरेगा पंचायतीराज एवं जनजातीय विकास' रावत् पब्लिकेशन्स जयपुर 2016

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM